ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २२ अंक : ८
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २४२)
१ फरवरी २०१३ मूल्य : ₹ ६
माघ-फाल्गुन वि.सं. २०६९

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा, श्रीनिवास

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य भाषाएँ	अंग्रेजी भाषा
वार्षिक	₹ ६०	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १००	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २२५	₹ ३२५
आजीवन	₹ ५००	----

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US $ 80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('ऋषि प्रसाद' के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org
www.rishiprasad.org

इस अंक में...

जमीन पर अवैध कब्जे के आरोप झूठे व निराधार

हाल ही में अखबारों तथा न्यूज चैनलों में आया कि एसएफआईओ (सीरियस फ्रॉड इन्वेस्टीगेशन ऑफिस) की तथाकथित जाँच रिपोर्ट के अनुसार, 'पूज्य संत श्री आशारामजी बापू और श्री नारायण साँईंजी ने ७०० करोड़ की जमीन पर अवैध कब्जा किया है।' यह सरासर झूठी एवं मनगढ़ंत बकवास है। उन्होंने यह भी कहा कि केन्द्रीय मंत्रालय से बापूजी एवं नारायण साँईं के ऊपर अभियोजन चलाये जाने के लिए अनुमति माँगी गयी है, जो कि एक सफेद झूठ के अलावा कुछ भी नहीं क्योंकि एसएफआईओ ने अपनी लम्बी जाँच-पड़ताल के बाद जिन आरोपियों के नाम दिये हैं, उनमें बापूजी और नारायण साँईंजी का किसी भी प्रकार से, कहीं भी नाम नहीं है। साथ ही संत श्री आशारामजी आश्रम ट्रस्ट का भी कोई जिक्र नहीं है। और इससे भी ज्यादा आश्चर्यजनक हकीकत यह है कि एसएफआईओ नाम की किसी भी जाँच एजेंसी ने न तो बापूजी से और न ही नारायण साँईं से कभी भी कोई पूछताछ की है ! इससे सहज ही अंदाजा लग जाता है कि कितना भारी षड्यंत्र रचा जा रहा है हमारे आस्था के केन्द्रों को येन-केन प्रकारेण बदनाम करने का !!!

साथ ही ७०० करोड़ रुपये की जमीन पर अवैध कब्जा कर लेने का आरोप भी सत्य से कोसों दूर है। वास्तविकता यह है कि जयंत विटामिन्स लिमिटेड, रतलाम ने अपनी मालिकी की जमीन पर वर्षों पूर्व भव्य मंदिर बनाये थे तथा इसकी देखरेख एवं रख-रखाव के लिए सन् १९९२ में एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट 'मांगल्य मंदिर धाम' की स्थापना कर यह मंदिर तथा संबंधित जमीन ५१ वर्षों की लम्बी अवधि के लिए इस ट्रस्ट को लीज पर दे दी थी। इसके ऐवज में ट्रस्ट ने ४० लाख रुपये की सिक्योरिटी राशि जयंत विटामिन्स लिमिटेड कम्पनी में जमा करायी थी तथा वार्षिक लीज रेंट नियमित जमा किया जाता था। इसके ट्रस्टी मंडल में सन् २००२ में श्री नारायण साँईंजी का भी एक ट्रस्टी के रूप में समावेश किया गया था। नारायण साँईंजी इन मंदिरों की देखभाल, साजसज्जा आदि तथा पूज्य बापूजी द्वारा निर्देशित सत्प्रवृत्तियाँ - जैसे कि गरीब बेरोजगारों के लिए 'भजन करो, भोजन करो, दक्षिणा पाओ' कार्यक्रम, धर्मादा आयुर्वेदिक चिकित्सालय, गौशाला आदि परोपकार की सत्प्रवृत्तियों का सफलतापूर्वक संचालन करते रहे।

सन् २००३ में किसी विवाद को लेकर मुंबई उच्च न्यायालय ने केस नं. ४६८/१९९९ में निर्णय दिया था कि वार्षिक भाड़ा (लीज रेंट) अब जयंत विटामिन्स लिमिटेड कम्पनी को न देकर मुंबई उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त कोर्ट रिसीवर को दिया जाय। तब से लेकर अब तक मांगल्य मंदिर ट्रस्ट, कोर्ट रिसीवर को नियमित वार्षिक भाड़ा चुकाता आया है। यहाँ तक कि वर्तमान में सन् २०१४ तक की एडवान्स लीज रेंट राशि भी जमा करा दी है। तो पूज्य बापूजी एवं नारायण साँईं द्वारा इस भूमि को हड़पने की खबर कितनी हास्यास्पद है !

अब आप ही फैसला कीजिये कि मीडिया द्वारा आये दिन कुप्रचारित अनर्गल खबरों पर कितना विश्वास करना ???...

हिन्दुओं को सावधान एवं संगठित होना चाहिए। अपने देश और संस्कृति की रक्षा करने में अधिकारियों को सावधान रहना चाहिए। कुप्रचार के बहकावे में अधिकारियों को नहीं आना चाहिए। भगवत्प्रेमी, देशप्रेमी, मानवप्रेमी, सत्यप्रेमी लोगों को बहकावे में न आकर देश और सत्य के पक्ष में रहना चाहिए। ❐

तांत्रिक विधि के आरोप बनावटी

'अहमदाबाद गुरुकुल के दो बच्चों की अपमृत्यु तांत्रिक विधि द्वारा हुई है' - ऐसा झूठा प्रचार करनेवाले आश्रम-विरोधियों की अब सारी हवा निकल गयी है । लम्बी बहस के बाद त्रिवेदी जाँच आयोग के समक्ष जनसंघर्ष मंच के प्रतिनिधि एवं अभिभावकों के वकील सुब्रह्मण्यम् अय्यर ने दिनांक १८ जनवरी २०१३ को स्वयं इस बात को स्वीकार करते हुए कहा : ''न्याय-सहायक विज्ञान प्रयोगशाला (एफएसएल) की रिपोर्ट तथा चिकित्सा-विशेषज्ञों के बयानों से स्पष्ट होता है कि दीपेश-अभिषेक पर तांत्रिक विधि नहीं की गयी थी । हमारी शंका थी कि वह की गयी है परंतु अब हम तांत्रिक विधि के आरोप वापस लेते हैं । राजू चांडक, अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, सुखविंदर सिंह औघड़, ईश्वर नायक, रमेश पटेल, सतीश पटेल, दिनेश कानपरिया (भाणा भाई), कौशिक पटेल आदि लोगों ने निजी स्वार्थ के कारण पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं तथा आश्रम पर तांत्रिक विधि करने के आरोप लगाये । इन लोगों द्वारा लगाये गये तांत्रिक विधि के आरोप उपजाये हुए हैं, बनावटी हैं । तांत्रिक विधि के कोई सबूत नहीं हैं ।''

लगातार पिछले साढ़े चार वर्षों से आश्रम की प्रतिष्ठा से खिलवाड़ कर झूठी, आधारहीन, चटपटी खबरें छपवाकर तथा दिखाकर आम जनता में आश्रम के प्रति नफरत फैलायी जा रही है । परंतु न्यायमूर्ति श्री डी.के. त्रिवेदी जाँच आयोग के समक्ष अभिभावकों के वकील अय्यर की इस स्वीकारोक्ति से सत्य और धर्म की विजय हुई है और **'सत्यमेव जयते'** चरितार्थ हो गया है । समाज-विरोधियों, निजी स्वार्थियों तथा देश में अस्थिरता पैदा करनेवालों ने पूज्य बापूजी तथा आश्रम पर तांत्रिक विधि करने के आरोपों का जो कुचक्र चलाया था, उसका भांडा आखिर फूट ही गया और 'दूध का दूध, पानी का पानी' हो गया ।

साँच को आँच नहीं, झूठ को पैर नहीं ।

उल्लेखनीय है कि हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने भी आश्रम की पवित्रता पर लगाये गये आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया है । अब अभिभावकों के वकील द्वारा की गयी उपरोक्त स्पष्टोक्ति, पिछले कुछ वर्षों से 'आश्रम में काला जादू' जैसी बातें फैलाकर आश्रम के खिलाफ चलाये जा रहे सुनियोजित षड्यंत्र का पर्दाफाश करती है । ❑

''मीडिया पर से लोगों का विश्वास उठ चुका है''

- आईबीएन7 के एडिटर-इन-चीफ राजदीप सरदेसाई

'प्रभात खबर लीडरशिप समिट' में अपनी बात रखते हुए सीएनएन-आईबीएन, आईबीएन7 और आईबीएन7 लोकमत के एडिटर-इन-चीफ राजदीप सरदेसाई ने जोर देते हुए कहा : ''पिछले २० सालों में देश में सातों दिन चौबीस घंटे चलनेवाले ३७५ न्यूज चैनल लॉन्च हुए हैं । यह एक ऐसा जानवर है जो हमेशा भूखा होता है । यहाँ प्रश्न उठता है कि उसे खाने के लिए क्या दिया जाय । हालाँकि इसमें कोई शक नहीं कि मात्रा में बढ़ोतरी दर्ज हुई है, लेकिन दुर्भाग्य से गुणवत्ता में कमी आयी है ।''

मीडिया के बारे में लोगों की राय के बारे में सरदेसाई ने कहा : ''अब लोगों का विश्वास मीडिया से उठ चुका है । लोग हमसे डरते हैं, किसी तरह का हमें आदर-सम्मान नहीं देते ।''

उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि आज का मीडिया मनोरंजन और नाटकीय या उत्तेजक सामग्री परोसने का साधन बनकर रह गया है । ❑

हमारे महात्माओं की बातों को तोड़-मरोड़कर पेश किया जा रहा है

- श्री अशोक सिंहल, मुख्य संरक्षक व पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद

इस भारतीय संस्कृति को मिटाने का बड़ा सुनियोजित षड्यंत्र चलाया जा रहा है। पूरे भारत देश में अमेरिका के एन.जी.ओस् (नॉन गवर्नमेंटल ऑर्गनाइजेशन) काम करते हैं। अमेरिका की सभ्यता भारत में कैसे थोपी जाय इसके अनेक प्रयत्न किये जा रहे हैं और हमारे बड़े-बड़े महात्माओं एवं संगठन के प्रमुखों को बदनाम करने के लिए उनकी बातों को तोड़-मरोड़कर एवं गलत ढंग से पेश किया जा रहा है, जिससे उनके प्रति हमारी श्रद्धा समाप्त होने लग जाय।

मेरे मन को बड़ा कष्ट इसलिए होता है कि जो सबसे बड़े हैं - बापू, जिनका नाम पूरे देश में सबसे ऊपर दिखाई पड़ता है, उनके लिए षड्यंत्र चल रहा है कि 'अब बापू को बदनाम करो, उनके प्रति लोगों की श्रद्धा समाप्त करो।' तो क्या वे बापूजी के प्रति हमारी श्रद्धा नष्ट कर सकते हैं ? कदापि नहीं। श्रद्धा तो बढ़ती चली जा रही है, कौन रोक सकता है ?

अमेरिका और यूरोप की कम्पनियों का बड़ा भारी पैसा इस देश के भीतर संगठन चलाने के लिए आता है और वे हमारे महात्माओं को बदनाम करने के लिए लगे हुए हैं। इस देश के भीतर पश्चिम की संस्कृति ने ऐसी जकड़न पैदा की है कि न तो हमारा राम-जन्मभूमि का मंदिर बन पा रहा है और इस देश में हर साल एक करोड़ गौ-हत्या होती रहती है, कोई रोक नहीं पा रहा है। गंगा को नष्ट करने का भी बड़ा भारी प्रयास चल रहा है।

बापूजी ! आप तो महाशक्ति हैं, भगवत्शक्ति आपके साथ है। अतः आपके श्रीचरणों में यही निवेदन करना चाहता हूँ कि किसी प्रकार से हमारी संस्कृति फले-फूले। संस्कृति के आधार पर और धर्म की रक्षा करते हुए इस देश का विकास हो। ❐

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा वैश्विक स्तर पर मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रमों का अभियान चलाया जा रहा है, साथ ही मातृ-पितृ पूजन से संबंधित स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है। युवा पीढ़ी के चरित्र-विकास एवं समाज के अंदर मूल्यों के प्रसार में इस प्रकार के आयोजन निश्चित रूप से प्रेरणादायी होंगे। **- श्री विजय बहुगुणा, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड**

मातृ-पितृ पूजन कार्यक्रम अभियान एवं 'मातृ-पितृ पूजन' पुस्तिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

- श्री मंत्री प्रसाद नैथानी, विद्यालयी, प्रौढ़ व संस्कृत शिक्षा एवं पेयजल मंत्री, उत्तराखंड

पुण्यदायी तिथियाँ

३ मार्च : रविवारी सप्तमी (शाम ६-१९ से ४ मार्च सूर्योदय तक)

८ मार्च : त्रिस्पृशा विजया एकादशी (१००० एकादशी व्रतों एवं करोड़ों तीर्थों का फल मिलता है।)

१० मार्च : महाशिवरात्रि व्रत, रात्रि-जागरण, शिव-पूजन (निशीथकाल : रात्रि १२-२४ से १-१३ तक), (प्रहर :- प्रथम : शाम ६-४५ से, द्वितीय : रात्रि ९-४७ से, तृतीय : मध्यरात्रि १२-४९ से, चतुर्थ : ११ मार्च प्रातः ३-५० से)

११ मार्च : सोमवती अमावस्या (सूर्योदय से रात्रि १-२३ तक), द्वापर युगादि तिथि

१४ मार्च : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : शाम ४-५८ से सूर्यास्त तक)

संस्कृति संरक्षण-संवर्धन की अद्भुत पहल : प्रेरणा सभा

भारत के संत-महापुरुषों से संरक्षित-संवर्धित वैदिक संस्कृति सदियों से अपने अध्यात्म दर्शन, उच्च जीवनशैली, प्रेम, सौहार्द, आत्मभाव, सर्वहित प्रधानता के कारण सभी संस्कृतियों की सिरताज रही है । परंतु वर्तमान में विदेशी कुरीतियाँ - 'वेलेंटाइन डे' जैसे दिन भारतीय संस्कृति की जड़ों को खोखला करने की कुचेष्टा कर रहे हैं ।
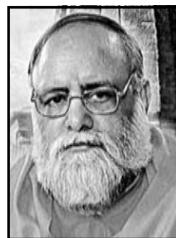
वेलेंटाइन डे के परिणामों पर नजर डाली जाय तो इस दिन आत्महत्याएँ, बलात्कार, प्रेमी-प्रेमिकाओं का घर से भाग जाना आदि आपराधिक प्रवृत्तियाँ बढ़ जाती हैं तथा कंडोम, शराब व नशीले पदार्थों का विक्रय करोड़ों में होता है ।

पाश्चात्य संस्कृति की अंधी दौड़ में हो रहे भारतवासियों के अधःपतन को देखकर आध्यात्मिक क्रांति के प्रणेता, संस्कृतिरक्षक पूज्य संत श्री आशारामजी बापू का हृदय द्रवित हो उठा । उन्होंने इस बुराई की दिशा मोड़ते हुए समाज में नवचेतना का संचार करनेवाले दिवस का आह्वान किया, 'विरोध नहीं, विद्रोह नहीं ! 'वेलेंटाइन डे' के विरोध की अपेक्षा १४ फरवरी को **'मातृ-पितृ पूजन दिवस'** मनाओ ।'

अतः बापूजी की पावन प्रेरणा से पिछले ७ वर्षों से देश-विदेश में १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने का भगीरथ कार्य किया जा रहा है । इस बार इसे और भी व्यापक रूप से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का ब्रह्मसंकल्प बापूजी ने किया है । विश्वमांगल्य के इस संकल्प की पूर्ति हेतु फरवरी २०१२ में दिल्ली तथा नवम्बर २०१२ में बड़ौदा व दिल्ली में **'प्रेरणा सभाओं'** का आयोजन किया गया था । इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए २८ व ३० दिसम्बर २०१२ को दिल्ली तथा मुंबई में तथा १७ जनवरी २०१३ को प्रयागराज कुम्भ में पूज्य बापूजी की अध्यक्षता में भव्य 'प्रेरणा सभाओं' का आयोजन हुआ ।

इन प्रेरणा सभाओं में विश्व हिन्दू परिषद, अखिल भारतीय संत समिति, निरंजनी अखाड़ा, जूना अखाड़ा, उदासीन अखाड़ा, महानिर्वाणी अखाड़ा, अटल अखाड़ा, सनातन संस्था, वारकरी सम्प्रदाय, कालिका पीठ, श्री स्वामी समर्थ सम्प्रदाय, हिन्दू समिति, अखिल भारतीय धर्मरक्षक समिति, अखिल महाराष्ट्र संत समिति, राष्ट्रवादी शिवसेना, डिवाइन वैदिक एसोसिएशन, जैन समाज, मुस्लिम समाज आदि के धर्माचार्यों, महामंडलेश्वरों तथा अध्यक्षों के साथ अनेक राजनेताओं, समाजसेवियों व गणमान्य सुप्रसिद्ध हस्तियों ने भी बापूजी के इस दैवी कार्य में सहभागी होने का सौभाग्य पाया । इस दैवी कार्य की हृदय से प्रशंसा करते हुए उन्होंने अपने उद्गार व्यक्त किये :

निरंजनी अखाड़ा के महामंडलेश्वर ब्रह्मर्षि कुमार स्वामीजी महाराज : साक्षात् नारायण के स्वरूप, श्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ, जगतनियंता, ऋषियों के ऋषि, ज्ञाताओं के ज्ञाता, तत्त्वदर्शी और जगत के कण-कण के रहस्यों को जाननेवाले, प्रज्ञा देनेवाले, महातत्त्ववेत्ता, परम पिता परमात्मस्वरूप, इन्हें केवल संत कहना ठीक नहीं है, साक्षात् नारायण, परम सद्गुरु श्री आशारामजी के चरणों में कोटि-कोटि वंदन, नमन, प्रणाम !

ये सभी संत पूज्य आशारामजी के एक बार निमंत्रण देनेमात्र से दौड़े चले आये ! यह निश्चय ही पूज्य बापूजी की शक्ति एवं इनका बापूजी के प्रति अहोभाव है जो ये दौड़े-दौड़े आये हैं। इनसे मैंने बहुत वर्षों पहले एक ऐसा अनूठा नामदान (मंत्रदीक्षा) लाल किले में लिया, जिसकी शक्ति से असंख्य लोग दुःखों से मुक्त हो गये। बापूजी ऐसे-ऐसे रहस्यों के ज्ञाता हैं ! ये हर रहस्य को जाननेवाले हैं ।

धर्मांध, नास्तिक, आसुरी वृत्तिवाले लोगों ने नारायणस्वरूप संत श्री आशारामजी से वह छलपूर्ण व्यवहार किया, जो रावण भी नहीं कर सकता था।

रावण ने तो सामने आ के रामजी से युद्ध किया लेकिन इन्होंने पर्दे के पीछे रहकर दुष्प्रचार किया ।
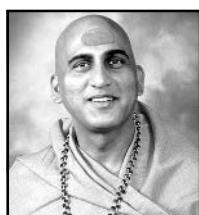
अगर बापूजी निंदकों के विरुद्ध कुछ वचन भी निकाल दें, सोच लें कि 'ऐसा हो', उसी पल में वैसा हो जायेगा । लेकिन ये करुणावान हैं !

युवाओ ! आप यह जानकर हैरान होंगे कि पूरे विश्व में करोड़ों लोग एचआईवी (एड्स) से पीड़ित हैं । हर्पिस, गोनोरिया, सिफलिस... ऐसे-ऐसे रोग हैं जो वेलेंटाइन डे मनाने से हो रहे हैं । इस तरह से बच्चों की दुर्दशा हो रही है ।

सभी संतों ने विचारा है कि 'हम संत आशारामजी के साथ रहेंगे । जैसा वे कहेंगे, वैसा करेंगे ।'

आज धर्म का मार्ग पाश्चात्य संस्कृति मिटा रही है, यह हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों सभीके लिए खराब है । जो नास्तिक लोग हैं, उनका एक ही उद्देश्य है कि कैसे भारत के युवा तबाह हो जायें ।

अभी हम सरकार से प्रार्थना कर रहे हैं कि 'वेलेंटाइन डे' बंद करे । यह पूरा संत-समाज एवं सभी संगठन पूज्य आशारामजी बापू के साथ हैं । जब ये आदेश देंगे, हम इस देश को बदल देंगे ।

जूना अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर श्री अवधेशानंदजी का संदेश : बापूजी अध्यात्म की एक प्रेरणा-ज्योति हैं और यह प्रेरणा-ज्योति विश्व को दिशा देगी ।

अंतर्राष्ट्रीय भागवत कथाकार श्री चिन्मय बापू महाराज : परम वंदनीय, प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री आशारामजी बापू के चरणों में सादर प्रणाम ! पूज्य बापूजी का आदेश हुआ तो मैं यहाँ सीधे भागता हुआ चला आया । हमारे जवान भाई-बहनों के भीतर भगवान राम की तरह मर्यादा आनी चाहिए । हमारे देश में चरित्रवान की पूजा होती है । इसलिए हमें 'वेलेंटाइन डे' नहीं मनाना है, यह पाश्चात्य सभ्यता है । मैं बहनों से भी प्रार्थना करूँगा कि **आप भी कपड़े ऐसे पहनें कि लोगों की आँखों का दर्शन बनें, प्रदर्शन नहीं ।**

जब भी संतों ने आह्वान किया है, हमारा भारत जागृत हुआ है और तब ही भारत की संस्कृति की रक्षा हुई है । आज पूज्य बापूजी ने जो संकल्प लिया है, हम देशवासियों को प्रार्थना करेंगे कि सब एकजुट हो के पूज्य बापूजी के साथ लग जायें । **आनेवाले समय में पूज्य बापूजी का यह जो क्रांति का शंखनाद है, वह एक इतिहास बनकर रहेगा ।**

जूना अखाड़ा के वरिष्ठ महामंडलेश्वर स्वामी अर्जुन पुरीजी महाराज : परम आदरणीय, तपोनिष्ठ, श्रद्धेय संत आशारामजी बापू को कोटि-कोटि वंदन !

हम हर साल कम-से-कम ८-१० देशों का भ्रमण करते हैं और घर-घर में हमने देखा, लोगों ने अपने मंदिरों में, बैठक व शयनकक्ष में, जहाँ देखो अगर भगवान का फोटो लगाया है तो साथ में बापू आशारामजी का भी फोटो है । हम पूजा उसकी करते हैं, हम भगवान उसको मानते हैं, जो हमारा कल्याण करे, जिससे हमारी रक्षा हो ।

आज जो एक संकल्प लिया गया है वेलेंटाइन डे की जगह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने का तो इस पवित्र अभियान के साथ सारा जूना अखाड़ा भी है ।

लौटिये आप अपनी परम्परा, अपनी संस्कृति में और संत का जो आह्वान है, उसको सामने रखकर, एक गुरुमंत्र समझकर अपनाइये । मंत्रदीक्षा का ऐसा प्रबल प्रभाव बापू आशारामजी ने दुनिया में फैलाया है ।

जब-जब देश पर, हमारी संस्कृति पर आपत्ति आती है तब परमात्मा कोई-न-कोई रूप में आते हैं । परमात्मा का विशेष अंश लेकर बापू आशारामजी आये हैं । आप उनके आदेश को मानें और १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनायें । यही

आपकी राष्ट्र, संत और बापू के प्रति कृतज्ञता होगी ।

कालिका पीठाधीश्वर महंत श्री सुरेन्द्रनाथ अवधूतजी महाराज : प्रातःस्मरणीय, विश्ववंदनीय, परम श्रद्धेय पूज्य बापूजी को मेरा नमन ! बापूजी ने एक दिशा दी है, एक चिंतन दिया है कि भावी पीढ़ी को हम किस प्रकार संस्कारित करें, सही दिशा दिखायें । इसके लिए उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय वह कम है ।

जिसमें कुछ देने का सामर्थ्य है, वह देवता है । जिनकी कृपा से, अनुग्रह से हमें जीवन मिला उनसे बड़ा देवता और कौन हो सकता है ? हमें नित्यप्रति उनका अभिवादन करना चाहिए ।
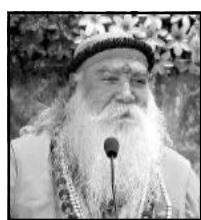
जूना अखाड़ा के महामंडलेश्वर डॉ. उमाकांतानंद सरस्वतीजी : हमारी भावी पीढ़ी में संयम और संस्कारों का ह्रास हो रहा है, यह हमारे, बापूजी के तथा समस्त मानवप्रेमियों के हृदय का दर्द है । बापूजी ने 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने का उद्घोष किया है । इस महान कार्य के लिए हम हृदय से उनके आभारी हैं और पूरा साधु-समाज हमेशा, हर कदम पर आपके साथ रहेगा ।

अखिल दिल्ली संत समिति के अध्यक्ष, महामंडलेश्वर स्वामी प्रज्ञानंदजी महाराज : परम पूजनीय, वंदनीय, श्रद्धेय संत श्री आशारामजी बापू को साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने एक बहुत अच्छा विचार देश, समाज और नयी पीढ़ी को दिया है ।

पश्चिम के पास संस्कृति नहीं है, सभ्यता है । सभ्यता का मतलब है - 'खाओ, पियो और मौज करो ।' संस्कृति का मतलब है - 'जियो और जीने दो ।' यहाँ बच्चों को जीने की शिक्षा दी जा रही है, संस्कार दिये जा रहे हैं । जहाँ संस्कार हैं, वहाँ विचार हैं । हमें विचार करना है, प्रचार करना है । यह तो ठीक है मगर समस्या का समाधान इससे नहीं होगा, उपचार से होगा । बापूजी द्वारा उपचार किया जा रहा है, लोगों को दिशा दी जा रही है, विचार दिये जा रहे हैं । हमारे भगवान राम रोज प्रातःकाल उठकर माता-पिता, गुरु को वंदन, नमन किया करते थे । गणेशजी की पूजा क्यों होती है ? क्योंकि उन्होंने माता-पिता का पूजन किया था और यही परम्परा वेलेंटाइन डे के स्थान पर 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में बापूजी ने शुरू की है । पूज्य बापूजी ने यह बहुत अच्छा आह्वान किया है । इसी संदेश को लेकर गाँव-गाँव में जायें ।

बापूजी ! आपके 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के कार्यक्रमों में सभी संत आपका साथ देंगे ।

उदासीन अखाड़ा के वरिष्ठ महामंडलेश्वर स्वामी हरिचेतनानंदजी महाराज : परम श्रद्धेय, परम पूज्य आशारामजी बापू महाराज ! भारत की पहचान 'वेलेंटाइन डे' से नहीं है । भारत की पहचान पुंडलिक जैसे, जिन्होंने अपने माता-पिता की सेवा की है, उनसे है । आज किसी-न-किसी तरह से भारत की पहचान को मिटाया जा रहा है ।

यदि आप सच्चे मायने में भारत के संतों का, महापुरुषों का और अपने पूज्य गुरुदेव का आदर करना चाहते हो तो ऐ भारत के युवाओ ! वेलेंटाइन डे जैसी बीमारियाँ जो समाज में आ गयी हैं, उनको खत्म करने की आवश्यकता है । आज के युवकों को अच्छे संस्कार देने की आवश्यकता है । संस्कार भरने का कार्य संत-महापुरुष कर रहे हैं । इन महापुरुषों के संदेशों को, बापूजी के विचारों को आप जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें और आप इस प्रयास में सफल होंगे ।

भारत की पहचान गौ, गंगा और संत-महात्मा हैं । भारत की पहचान एक और है - 'श्रीमद्

भगवद्‌गीता' । उसके ऊपर आवरण डाला जा रहा था लेकिन भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में जो कहा, उस संदेश को सच्चे मायने में आशारामजी बापू ने जन-जन तक पहुँचाया इसलिए संत-समाज उनको बहुत साधुवाद देता है ।

विश्व सिंधु परिषद के अध्यक्ष महामंडलेश्वर डॉ. गंगादास उदासीन : मैं पूजनीय, श्रद्धेय, सदा वंदनीय बापूजी को नमन करता हूँ, विश्व सिंधु परिषद व स्वामी जुगतराम मिशन की ओर से मैं साधुवाद देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि बापूजी दीर्घायु और स्वस्थ रहकर हम सबका मार्गदर्शन करते रहें ।

मुझे अभी प्रेरणा हुई और मैंने संदेशा दे दिया अपनी प्रेस को कि 'इस कुम्भ में जो हमारे कैलेंडर छपनेवाले हैं, उनमें १४ फरवरी को बापूजी की प्रेरणा से **'मातृ-पितृ पूजन दिवस'** छपवा दिया जाय ।' और मेरा आप सबसे तथा पूजनीय संतों से निवेदन है कि आज से ही सबको एसएमएस कर दें, फेसबुक में डाल दें, ई-मेल कर दें, बापूजी का यह संदेश जन-जन तक पहुँचे । और इसमें कोई देर नहीं लगेगी ।

सुप्रसिद्ध भागवत कथाकार श्री संजीव कृष्ण ठाकुरजी महाराज : अब भारत का प्रत्येक भागवत वक्ता १४ फरवरी के दिन भागवत के पंडाल में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनायेगा । आपके द्वारा जो यह आह्वान किया गया है, यह सिर्फ आपका आह्वान नहीं, पूरे राष्ट्र का आह्वान है । छत्तीसगढ़ की सरकार 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाती है, और सब सरकारें भी मनायेंगी ।

मैं भारत के भाई-बहनों, विद्यालयों-महाविद्यालयों में पढ़नेवालों से कहूँगा कि 'यदि १४ फरवरी के दिन आप अपनी प्रेमिका को फूल देने गये तो यह आपके माता-पिता का अपमान होगा । आज आपके चरित्र और आपके संस्कारों की परीक्षा है । आज आपके सामने एक प्रश्नचिह्न है कि माँ-बाप का सम्मान करेंगे या किसी कन्या के हाथ में आप फूल देकर आयेंगे ? मुझे लगता है भारत का युवक १४ फरवरी को जगेगा । वह माता-पिता के चरण छूकर पिता को तिलक करेगा । आज बापूजी ने कोई विरोध की बात नहीं कही, एक विकल्प दिया है, एक समाधान दिया है और मैं पूरे देश में आह्वान करता हूँ, '१४ फरवरी के दिन हम जगेंगे, माता-पिता का सम्मान करेंगे जिन्होंने हमें जीवन दिया ।'

विश्व हिन्दू परिषद के मुख्य संरक्षक एवं पूर्व अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक सिंहलजी : परम पूज्य बापूजी ने आज **'मातृदेवो भव । पितृदेवो भव ।'** - इस महान संदेश को विश्वव्यापी बनाकर समस्त विश्व का कल्याण करने के लिए सभी संतों को यहाँ पर आमंत्रित किया है । सच में बापूजी का ही सामर्थ्य है कि हमारे इस देश की संस्कृति की रक्षा के लिए इतनी बड़ी पश्चिमी संस्कृति के साथ वे सीधा-सीधा संघर्ष कर रहे हैं और उन्होंने जो रास्ता अपनाया है, वास्तव में वही सही रास्ता है ।

बापू ने एक ऐसा मार्ग बताया है जिसमें संघर्ष का कोई मार्ग है ही नहीं । महाराजजी बुलाते हैं, मैं तो सदैव उनके चरणों में उपस्थित हूँ । मैं समझता हूँ कि १४ फरवरी आये उसके पहले ही अगर पूरा संतमंडल इस काम में लग जायेगा तो जो विदेशी शक्तियाँ कार्य में लगी हैं उनका खुलकर पता लग जायेगा कि ये कौन हैं और क्या काम करना चाहती हैं ? मैं महाराजजी के चरणों में बारम्बार प्रणाम करता हूँ ।

जैन समाज के आचार्य युवा लोकेश मुनिश्रीजी : भारतीय संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट और धूमिल करने के लिए 'वेलेंटाइन डे' जैसे

कार्यक्रमों के द्वारा जो प्रयास होते हैं, उनके विरुद्ध और भारतीय संस्कृति की रक्षा व उसकी आन-बान और शान के लिए बापूजी ने जो 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' का आह्वान किया है, मैं इसका विश्व भारती और जैन समाज की ओर से पूरा विश्वास दिलाता हूँ कि जहाँ-जहाँ भी हमारे कार्यक्रम होंगे, उन कार्यक्रमों में हम लोगों को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाने का संकल्प करायेंगे ।
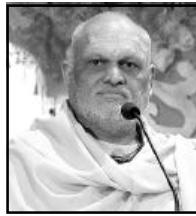
पिछले काफी समय से बापूजी की छवि को धूमिल करने के प्रयास हुए किंतु गोधरा की हेलिकॉप्टर दुर्घटना ने हमें यह दिखा दिया कि इनके पास जो दिव्य शक्ति है, आत्मा की शक्तियाँ हैं, उन्हें कोई पराजित नहीं कर सकता !

महामंडलेश्वर डॉ. रामविलास वेदांतीजी : परम सम्माननीय, भारतीय संस्कृति साधना के प्रतीक, सर्वधर्म-संरक्षक पूज्य श्री आशाराम बापूजी ! भारत के इतिहास में पहली बार किसी संत ने हमारी वैदिक परम्परा **'मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव ।'**, जिसको केवल पढ़ा था, सुना था... लेकिन भारत की भूमि में जनता के सामने चरितार्थ करने का काम यदि किसीने किया है तो उनका नाम आशारामजी बापू है । मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ ।

आज हमारी संस्कृति की रक्षा करने के लिए **'मातृदेवो भव । पितृदेवो भव । आचार्यदेवो भव ।'** की परम्परा, जिसको आशारामजी बापू ने प्रारम्भ किया है, भारत के गाँव-गाँव में, घर-घर में होनी चाहिए ।

भारत के ईसाई विद्यालयों में आज भी खुलेआम हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति की निंदा होती है । विदेशी संस्कृति के आधार पर पढ़ानेवाले ऐसे विद्यालयों में भारत के हिन्दू अपने बच्चों को पढ़ाना बंद करें । हम आशारामजी बापू के पदचिह्नों पर चलकर भारतीय संस्कृति के अनुसार अपने बच्चों को पढ़ायेंगे, लिखायेंगे और आगे बढ़ायेंगे ।
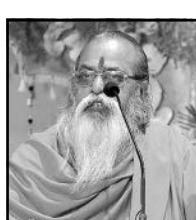
महानिर्वाणी अखाड़ा के महामंडलेश्वर श्री स्वामी विश्वेश्वरानंद गिरिजी महाराज : वर्तमान युग में सनातन धर्म की परम्परा को, सनातन धर्म की ध्वजा को जिन्होंने अपने कंधे पर उठा के चलने का संकल्प लिया है, वे हैं परम श्रद्धेय संत श्री आशारामजी बापू ।

मुझे बड़ा दुःख होता है कि भारत देश में जिस नारी का सम्मान होता था, जिस नारी को हम माता कहते हैं, **'मातृदेवो भव ।'** उसके साथ जो घटनाएँ घट रही हैं, उनको सुन के - देख के अपना सिर झुक जाता है । इसलिए हमारे आशारामजी बापू ने विचार किया कि एक संदेश जाना चाहिए संतों के माध्यम से ।
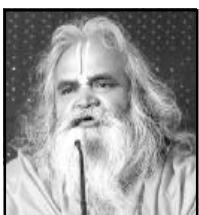
'रामायण' धारावाहिक के माध्यम से भगवान श्रीराम को हमारी आँखों के सामने साकार करनेवाले श्री अरुण गोविलजी : पूज्य संत श्री बापूजी के चरणों में प्रणाम ! मेरे लिए यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आज पूज्य बापूजी का साक्षात् दर्शन करने का अवसर मिला । पूज्य बापूजी ने १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन' का दिन घोषित किया, यह बहुत ही सुंदर प्रयास है, जो आज हमारे देश के लिए बहुत जरूरी है ।

आप सब मेरे साथ संकल्प करें, 'आओ मनायें १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस !'

नर्मदा आश्रम के महामंडलेश्वर श्री ओंकारानंदजी महाराज : आकाश की शोभा चन्द्रमा के बिना नहीं, तालाब की शोभा कमल के बिना नहीं और हिन्दुस्तान की शोभा वैदिक संस्कृति के बिना नहीं । तन शुद्ध होता है स्नान से, धन शुद्ध होता है दान से, मन शुद्ध होता है ध्यान से और हिन्दुस्तान

शुद्ध होगा 'मातृ-पितृ पूजन' जैसे अभियान से ।

पूज्य आशारामजी बापू जब भी मुझे याद करेंगे तो मैं इनकी सभा में हाजिर होऊँगा ।

'महाभारत' धारावाहिक में युधिष्ठिर की भूमिका बखूबी निभानेवाले श्री गजेन्द्र चौहानजी : परम आदरणीय, परम श्रद्धेय, परम पूजनीय आशाराम बापूजी को दंडवत् प्रणाम ! जब तक इस देश में पूज्य बापूजी जैसे संत विराजमान हैं, तब तक इस देश की सभ्यता और संस्कृति का कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता । आज हम सभी दृढ़ निश्चय करें कि १४ फरवरी को माता-पिता का पूजन अवश्य करेंगे ।

अटल अखाड़ा के पीठाधीश्वर श्री शुकदेवानंद पुरीजी का संदेश : पूज्य बापूजी के 'मातृ-पितृ पूजन' के इस कार्य में हमारा पूर्ण समर्थन है ।

श्री स्वामी समर्थ सम्प्रदाय, महाराष्ट्र के प्रमुख श्री अन्नासाहब मोरेजी का संदेश : पूज्य बापूजी को प्रणाम ! महाराष्ट्र का पूरा स्वामी समर्थ परिवार आपके इस विश्वमांगल्य के कार्य में आपके साथ है । जब भी, जहाँ भी आप संकेत करोगे, हम आपका साथ देने पहुँच जायेंगे ।

हिन्दू समिति के अध्यक्ष श्री तपन घोषजी : दौड़ते हुए घोड़े की पूँछ को पकड़ के उसकी रफ्तार को रोका नहीं जा सकता है । यदि उसे रोकना है तो आगे जाकर उसको सही दिशा देनी पड़ती है । १४ फरवरी को **'मातृ-पितृ पूजन दिवस'** मनायें तो वह हमारे और पूरी दुनिया के युवाओं के लिए एक आदर्श बन सकता है ।

देश की संस्कृति देश का प्राण होती है और उसकी रक्षा के लिए पूज्य बापूजी ने एक रचनात्मक कदम उठाया है, एक नया प्रारम्भ किया है और इसका परिणाम जरूर मिलेगा ।

जगद्गुरु श्री रामदिनेशाचार्यजी महाराज : जिनकी सत्प्रेरणा, सद्विचार से आज भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व आलोकित हो रहा है, ऐसे योगऋषि संत श्री आशारामजी बापू !

वास्तव में देश को जगाने और बचाने का संकल्प एक संत ही ले सकता है; और आज वह बीड़ा संतों ने उठाया है, जिसके अगुआ संत श्री आशारामजी बापू हैं । कुछ लोग कहते हैं, 'सब संत अलग हैं ।' हमारा वेश एवं भाषा अलग हो सकती है पर राष्ट्रोत्थान के लिए संत हमेशा एक होते हैं । 'विश्वगुरु भारत' का जो संकल्प बापूजी ने किया है, सभी नौजवानों तथा समस्त देशवासियों का कर्तव्य है कि उसको पूर्ण करें ।

महंत श्री जनेश्वर गिरिजी महाराज : पूज्य बापूजी ! आप बड़े महान हैं । और इस महाराष्ट्र की भूमि में आपने जो यह संकल्प हमसे करवाया है, हमारे जगद्गुरु जनानंद स्वामीजी महाराज के जो १९ लाख लोग हैं, इस पवित्र संकल्प से प्रेरित होकर 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' को हम पूर्ण रूप से मनायेंगे ।

अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सचिव व लोकसभा सांसद श्री संजय निरुपम : माता-पिता का सम्मान-पूजा करने, उनके प्रति यथेष्ट श्रद्धा रखने के विचार फैलाने का जो कार्यक्रम बापूजी चला रहे हैं, उसके लिए मैं उनके चरणों में कोटि-कोटि धन्यवाद अर्पित करता हूँ । सचमुच, समाज में इस प्रकार के विचार की बहुत आवश्यकता है ।

मैं चाहूँगा कि 'मातृ-पितृ पूजन' का जो कार्यक्रम बापूजी चला रहे हैं, उसका लाभ पूरे हिन्दुस्तान को ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया को हो ।

छत्तीसगढ़ सरकार ने बाकायदा इस प्रकार का अधिनियम बनाया है, जिसमें माँ-बाप का सम्मान करने का आग्रह, विचार और संकल्प है। **इस प्रकार के कानून बाकी राज्यों में भी बनें, बल्कि संसद द्वारा हिन्दुस्तान में बनें ताकि अलग से किसी राज्य को कानून बनाने की आवश्यकता न हो।**

महाराष्ट्र सरकार को भी इस प्रकार का कार्यक्रम शुरू करना चाहिए। यह विषय निश्चित तौर पर मैं महाराष्ट्र शासन और भारत सरकार के समक्ष रखूँगा। इस विचार का प्रचार-प्रसार पूरे देश में हो। हमारी जो आनेवाली नौजवान पीढ़ी है, जो देश का भविष्य है, वह अपने माँ-बाप का सम्मान व पूजा करना अपना धर्म-कर्म समझे, अपनी आस्था और श्रद्धा समझे - इसका प्रयास हमारी तरफ से भी होगा, ऐसा मैं पूज्य बापूजी के समक्ष वचन देता हूँ।

अखिल भारतीय धर्मरक्षक समिति के अध्यक्ष श्री हरिहर मणीन्द्रजी महाराज : परम पूज्य संत श्री आशाराम बापूजी को हृदयात्मा से नमन और वंदन करता हूँ। बापूजी का जहाँ, देश-परदेश में मुझे आह्वान और आदेश प्राप्त होगा, मेरे चार कदम आगे होंगे।

महामंडलेश्वर श्री नागेन्द्र ब्रह्मचारीजी महाराज : परम पूज्य बापूजी के चरणों में साष्टांग प्रणाम ! पूज्य बापूजी के इस महान अभियान में मेरा हमेशा पूर्ण समर्थन एवं सहयोग रहेगा।

अखिल महाराष्ट्र संत समिति के संयोजक महामंडलेश्वर श्री रामेश्वर शास्त्रीजी : परम पूजनीय संत आशारामजी बापू ! हिन्दुस्तान की युवा पीढ़ी को बरबाद करनेवाला कार्यक्रम लोग मना रहे हैं। यहाँ हिन्दुस्तान में माँ-बाप की सेवा होती थी और आज माँ-बाप की सेवा छोड़कर युवक 'वेलेंटाइन डे' मनाने जा रहे हैं। अब इस युवा पीढ़ी का परिवर्तन करना हो तो संतों के सिवाय इस दुनिया में कोई नहीं कर सकता है, इसलिए सभी सम्प्रदाय के संत इकट्ठे आ गये हैं। परम पूजनीय बापूजी जो-जो कार्यक्रम तैयार करेंगे, उस कार्यक्रम में हमारे महाराष्ट्र का पूरा वारकरी सम्प्रदाय बापूजी के साथ होगा।
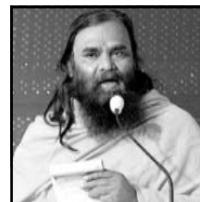
वाघम्बरी पीठाधीश्वर आचार्य आनंद गिरिजी महाराज : पूज्य आशारामजी बापू महाराज भारत की सुप्रसिद्ध हस्ती हैं और अध्यात्म-जगत में आपका एक अलग स्थान है। पूरा विश्व आपकी वाणी सुनने के लिए सदैव तत्पर रहता है।

माँ-बाप हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब धर्मों में पूज्य हैं। माँ-बाप का सम्मान, उनकी पूजा करना हमारा दायित्व है और हमें इसे तन-मन से मानना चाहिए तथा सबको अग्रसर भी करना चाहिए।

जिस प्रकार से छोटे बच्चे के हाथ से कोई निवाला छीनता है, आज ऐसे ही हमारे बच्चों के हाथ से शिक्षा छीनी जा रही है, अध्यात्म छीना जा रहा है, धर्म और भक्ति के मार्ग से भटकाया जा रहा है। महाविद्यालय के उत्सव के नाम पर शराब और बियर पिलायी जा रही है और सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर अश्लील नाच-गान किये जा रहे हैं।

आज ये सरकारें हमें आपस में लड़ाने का काम कर रही हैं। छोटी-सी बात को बहुत बड़ी बना के मीडियावाले एक-दूसरे को लड़ाने का प्रयास कर रहे हैं। अतः आज यह हमारी परीक्षा की घड़ी है, जिसमें हमें उत्तीर्ण होना जरूरी है।

अखिल भारतीय संत समिति के महामंत्री, महामंडलेश्वर श्री देवेन्द्रानंद गिरिजी महाराज : परम आदरणीय, परम पूजनीय, प्रातःस्मरणीय, परम श्रद्धेय, इस आयोजन और

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के सूत्रधार पूज्य बापूजी को प्रणाम करता हूँ । संत हमारे भारत की पहचान हैं और आज वे एक कोहिनूर के समान बड़ी तेजस्विता से हमारे सामने उसे प्रकट कर रहे हैं ।

मैं उनके लिए कहता हूँ कि -

जिनके भव्य ललाट व आँखों में
हजारों सम्राटों की चमक चमकती है ।
जिनके धवल वस्त्रों से
सहज-सरल साधुताई झलकती है ॥
जिनकी अमृतमयी वाणी से
ऋषियों की ज्ञानगंगा निसरती है ।
सत्संग में जिनके
'सर्वभूतहिते रतः' की महक महकती है ॥
प्रेम, करुणा, वात्सल्य की जो
साक्षात् मूर्ति दिखाई पड़ती है ।
जिनके तेजस्वी नयनों से उपासना झलकती है ।
ऐसे अनंत महिमा सद्गुरु आशाराम बापू की,
इस दुनिया में सदा चमक चमकती रहती है ॥
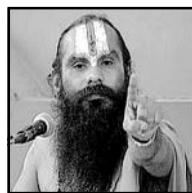
हमारी संस्कृति में प्रेम कोई 'यूज एंड थ्रो' की चीज नहीं होती, वेलेंटाइन डे मनानेवाले जिस तरह से सोच रहे हैं । हमारे यहाँ प्रेम एक अमूल्य, अमर जीवन की बात करता है ।

देश में आज जो वातावरण है, उसके लिए मैं इतना ही कहूँगा -

संवेदनशील एक-दूजे के लिए,
आचरण में सदाचार लाना होगा ।
ऋषियों की अपनी संस्कृति पर चलकर,
पाश्चात्य अंधे अनुकरण से बचना होगा ॥
मन की पवित्रता, स्थिरता के लिए,
आध्यात्मिक शिक्षा को धारण करना होगा ।
सद्गुरु आशाराम बापूजी के सत्संग में आना होगा ॥

श्री सुनील शास्त्रीजी महाराज : भारत माता के सपूतों के बीच व्यास की तरह जगमगाते, माँ भारती की आशा के प्रतीक और भारतीयों के लिए राम 'आशारामजी' के चरणों में इस राष्ट्र की कुछ व्यथा रखने की मैं इजाजत चाहूँगा । यह देश चोरों-डकैतों का नहीं है । यह देश है श्रीराम, श्रीकृष्ण, गुरु वसिष्ठजी, ऋषि भारद्वाज, चरक, चाणक्य, छत्रपति शिवाजी महाराज का । 'रामायण' में आया है -
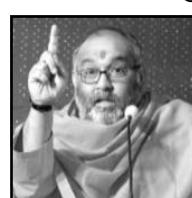
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा ।
मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥

जो अपने माता-पिता, गुरु के चरणों में वंदन करके अपने विजय के लक्ष्य के लिए चलता है, वह राम की तरह विजयी होता है । **मैं भारत के लोगों से प्रार्थना करूँगा कि माता-पिता का पूजन करें, आशीर्वाद लें और आशीर्वाद लेकर भारत की संस्कृति की उज्ज्वल पताका फहरायें ।** गुरु के चरणों में बैठकर कुछ प्रेमानंद में विभोर हों ।

प्रेम की क्या परिभाषा है ? न जिसे देखा जाय, न जिसे सुना जाय बल्कि जिससे अंतरात्मा में निर्विकार आनंद की अनुभूति हो, उस तत्त्व का नाम प्रेम है । वही प्रेम मूर्तिमंत होकर आज हमारे बीच में मंच पर व्यासरूप में विराजमान है । **भारत की आशा + राम अर्थात् आशारामजी बापू जब बैठे हैं तो पूरे समाज को यह भरोसा रखना चाहिए कि भारत का आनेवाला नौनिहाल सुरक्षित है ।** मैं भारत के नौजवानों को निवेदन करता हूँ कि 'माता-पिता की ओर लौटो, गुरु के चरणों में लौटो ।'

श्री राजमाता मंदिर झंडेवालान के राजगुरु श्री राजेश्वरानंदजी महाराज : आज जब बापूजी ने एक आह्वान किया कि 'इकट्ठे हो जाओ' तो कोई हरिद्वार से, कोई दिल्ली से तो मैं जम्मू से भागा-भागा चला आया ।

१४ फरवरी को 'वेलेंटाइन डे' मनाना किसका संदेशा देता है ? पाश्चात्य संस्कृति का । सूर्य जब भी उदय होता है तो पूर्व दिशा से और अस्त होता है पश्चिम दिशा में । अगर पाश्चात्य संस्कृति की तरफ जाओगे तो हम सबका सूर्य अस्त हो जायेगा, अज्ञान-अंधकार छा जायेगा ।

हमें बहनों, भाइयों, पति, पुत्र की चिंता है

लेकिन परिवार-व्यवस्था के आधार माँ-बाप की किसीको चिंता नहीं है। उनकी चिंता परम श्रद्धेय आशारामजी बापू को है। जो माँ-बाप को ही वृद्धाश्रम में छोड़ आता है, वह समाज की सेवा क्या करेगा ! माँ-बाप का आशीर्वाद लोक और परलोक में भी आपकी सहायता करेगा।

राष्ट्रवादी शिवसेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जयभगवान गोयलजी : यह 'वेलेंटाइन डे' आ कहाँ से गया ? पश्चिमी सभ्यता के लोग जो हमारे हिन्दुस्तान में अपना सामान बेचने के लिए आ रहे थे, वे आज सामान बेचते-बेचते हिन्दुस्तान का जो सम्मान है, उसको खरीदने का प्रयास कर रहे हैं।

हमारा भारत गुरुओं की, संतों की, ऋषि-मुनियों की धरती है। हमारी भारत माता योगभूमि है, जिसमें श्री आशारामजी जैसे संत अवतरित हुए हैं जो आज पूरी दुनिया को पवित्र संस्कार देकर जीव-शिव के योग का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। लोग कहते हैं -

बदल देता है जमाना अकसर।
लेकिन संत वे हैं जो जमाने को बदल देते हैं ॥

पूरे देश में, विदेश में जो भी लोग पथभ्रष्ट हो गये हैं, वे सब ऐसे महान संत श्री आशारामजी बापू के आशीर्वाद से रास्ते पर आयेंगे। जो बलात्कार जैसी घटनाएँ आज हमारे हिन्दुस्तान में हो रही हैं, उनके पीछे कारण है सिर्फ पश्चिमी सभ्यता और वेलेंटाइन डे जैसी कुरीतियाँ। इसलिए हम सबको मिल के प्रतिज्ञा लेनी है कि 'हम माता-पिता-गुरुओं की पूजा करेंगे।' हम ऐसा करेंगे तो जितनी भी शक्तियाँ हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति को नुकसान पहुँचाने आ रही हैं, वे सब-की-सब अपने-आप भाग जायेंगी।

बालयोगेश्वर श्री रामबालकदासजी महात्यागी : १४ फरवरी, जो हम लोगों के लिए एक कलंक बनता जा रहा है, उसी कलंक को तिलक-टीका बनाकर हम वह दिन 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में मनायेंगे। बापूजी द्वारा चलायी गयी यह एक अच्छी परम्परा है। छत्तीसगढ़ में १४ फरवरी को मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाने की शासकीय घोषणा की गयी है और वहाँ उस दिन सभी विद्यालयों में अभिभावकों का पूजन, तिलक, आरती, चरण-वंदन करने के संस्कार बच्चों को दिये जाते हैं, यह बापूजी का प्रभाव है। संत जो बोलते हैं, वह जनता करती है। इसलिए मैं सभी संतों से निवेदन करूँगा कि अपने-अपने राज्य की सरकार को एक स्वर में कहिये कि '१४ फरवरी को राजकीय त्यौहार के रूप में मातृ-पितृ पूजन दिवस मनाया जाय।' यह परम्परा सभी जगह होनी चाहिए।

अजमेर शरीफ के शाही इमाम हजरत मौलाना असगर अली साहब : इस जलसे के कर्ता-धर्ता, १६७ देशों में जो अमन का पैगाम, अमन का झंडा लेकर आगे बढ़ रहे हैं, ऐसे बापू की शान में एक शेर कहता हूँ -

तुम सलामत रहो हजार बरस,
हर बरस के दिन हों पचास हजार।

यह वेलेंटाइन डे सिर्फ हिन्दुओं के लिए नहीं बल्कि मुसलमानों तथा पूरी दुनिया के इन्सानों के लिए एक मसला खड़ा है। तो बापूजी के लिए दुआ करो कि उन्होंने एक बड़ी अच्छी शुरुआत की है। बापूजी ने एक आवाज दी है। इस मुल्क के सबसे बड़े बेताज बादशाह बापू को लब्बैक (प्रणाम) !

१७ जनवरी को **प्रयाग कुम्भ** में आयोजित **'प्रेरणा सभा'** में सहभागी सुप्रतिष्ठित संतजन : जूना अखाड़ा के वरिष्ठ महामंडलेश्वर स्वामी अर्जुन पुरीजी महाराज, बाघम्बरी पीठाधीश्वर आचार्य आनंदगिरिजी महाराज, विश्वगुरु महामंडलेश्वर परमहंस स्वामी महेश्वरानंद पुरी महाराज, वेणी माधव मंदिर, प्रयाग के मुख्य आचार्य श्री ओंकारानंदजी महाराज, संत श्री बालक योगेश्वरदासजी महाराज, बालयोगेश्वर श्री रामबालकदासजी महात्यागी, श्रीमहंत महामंडलेश्वर स्वामी आचार्य श्री फूलडोल बिहारीदासजी महाराज। ❐

प्रेरणा सभा के प्रेरणास्रोत तथा अध्यक्ष पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

हजारों-हजारों युवक-युवतियाँ तबाही के रास्ते जा रहे हैं । 'वेलेंटाइन डे' के बहाने 'आई लव यू - आई लव यू' करते-करते दिन-दहाड़े लड़का-लड़की एक-दूसरे को छुएँगे तो रज-वीर्य का नाश होगा । आनेवाली संतति तो तबाह होगी लेकिन वर्तमान में वे बच्चे-बच्चियाँ भी तो तबाह हो रहे हैं । तो लाखों-लाखों माता-पिताओं के हृदय की पीड़ा और लाखों-लाखों बच्चे-बच्चियों का भविष्य तबाही के रास्ते जा रहा है, उनकी पीड़ा से मेरा हृदय द्रवित हुआ । मेरा हृदय इसका समाधान खोजते-खोजते जहाँ सभी समस्याओं का सही उत्तर मिलता है, उधर गया तो मैंने कहा : 'विरोध नहीं, विद्रोह नहीं ।' गणेशजी ने **'सर्वतीर्थमयी माता, सर्वदेवमयः पिता'** करके शिव-पार्वती की सात प्रदक्षिणा की, दंडवत् प्रणाम किया तो गणेशजी पर शिवजी और पार्वती ने कृपा बरसायी और गणेशजी प्रथम पूजनीय हुए, दुनिया जानती है । इसलिए मैंने 'वेलेंटाइन डे' का विरोध नहीं परंतु 'वेलेंटाइन डे' के कुप्रभावों से बचकर माता-पिता का सत्कार करने को कहा ।

माता-पिता वैसे ही बच्चों पर मेहरबान होते हैं लेकिन जब बच्चा माता-पिता को कहता है, 'माँ ! तू मेरी है...' तो माँ की खुशी का ठिकाना नहीं रहता । 'पिताजी ! तुम मेरे हो...' तो पिताजी के आनंद का दरिया उमड़ता है । और जब माता-पिता का पूजन करेंगे तो उनका अंतरात्मा बच्चों पर बरसेगा और मेरे भारत के लाल-लालियाँ उन्नत होंगे, विश्व के लाल-लालियाँ उन्नत होंगे ! जिससे उनके माता-पिता अपनी आगे की जिंदगी अपने सपूतों की सेवा से सुखद गुजारें और परम सुखस्वरूप परमात्मा को पायें ।

सभी संतानें चाहे हिन्दुस्तान की हों, चाहे ब्रह्मांड के किसी भी कोने की हों, सभी बालक-बालिकाएँ उन्नत हों । सभीके माता-पिता प्रसन्न हों । और माता-पिता वृद्धाश्रम के हवाले न हों, पराधीन जीवन न जियें । माता-पिता बच्चों से सम्मानित रहें और बच्चे उनसे आशीर्वाद लेकर सुश्रेष्ठ रहें इसलिए यह भगीरथ कार्य हुआ । और ये सब संत मेरे साथ हैं । भगीरथ तो अकेले थे, मैं अकेला नहीं हूँ, पूरा संत-समाज, मानव-समाज, सभी जातियाँ, सभी मजहब, विश्वमानव मेरे साथ हैं और अपना ही कार्य समझकर दौड़े-दौड़े आते हैं, संत कृपालु हैं । तो जिसकी प्रेरणा हुई, वही सब काम करवा रहा है ।

छत्तीसगढ़ सरकार ने मेरी बात सुनी और १४ फरवरी को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' पूरे राज्य में मनाने की घोषणा कर दी । और उन बहादुरों ने जो कहा वह करके दिखाया । १६ फरवरी २०१२ को मेरे पास एक अखबार आया, उसमें देखा कि किसी सरकारी उद्यान में सिपाही खड़ा है और प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे के कान पकड़ के उठ-बैठ कर रहे हैं ।

पिछले साल अमेरिका और कई देशों में 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया गया । हिन्दुस्तान में भी कई जगहों पर मनाया गया । मैंने इस बार इस पुनीत कार्य को विश्व-स्तर पर ले जाने का संकल्प किया है । ईसाइयों का भी भला हो, यहूदियों, पारसियों का भी भला हो, प्राणिमात्र का भला हो । यह हमारी संस्कृति है और ये संत-महापुरुष इसी संस्कृति का संदेश हम तक पहुँचायेंगे । ❐

निर्दोषों पर अत्याचार
४९८अ के उपयोग में अंधाधुंदी

– अनिल पांडेय, विकास कुमार एवं आर.पी. अरोड़ा

'दहेज उत्पीड़न कानून' की धारा '४९८अ' के तहत पुलिस को बिना जाँच और सबूत के ही किसीको भी गिरफ्तार करने का अधिकार है । ४९८अ के तहत किया गया अपराध 'संज्ञेय' व 'गैरजमानती' है । यानी पुलिस लड़की की झूठी शिकायत पर भी पति पक्ष के लोगों को फौरन गिरफ्तार कर जेल भेज सकती है । 'जेंडर ह्यूमन राइट सोसायटी' के संदीप भरतिया कहते हैं : ''सर्वोच्च न्यायालय ने जाँच के बाद ही गिरफ्तार करने का आदेश दिया है । हमने इसकी प्रति सभी राज्यों के पुलिस प्रमुखों को भेजी है लेकिन ज्यादातर राज्यों में अभी भी पुलिस द्वारा इसे व्यवहार में नहीं लाया जा रहा है ।''

सरकारी आँकड़े ('नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो' रिपोर्ट-२०११) बताते हैं कि इस धारा के तहत करीब ७९.८% मामलों में गिरफ्तार किये गये लोग अदालत में निर्दोष साबित हो जाते हैं । ७.६% मामले पुलिस द्वारा ही झूठे अथवा गलत पाये जाते हैं । इसके अतिरिक्त जाँच किये गये मामलों में से ५.६% मामलों में पुलिस द्वारा आरोप-पत्र दाखिल नहीं किया जाता और आरोप-पत्र दाखिल किये गये मामलों में कई-कई साल मुकदमे चलते रहते हैं । अतः निर्दोष लोगों के सताये जाने की दर कहीं ज्यादा है । **वर्ष २०११ में ४९८अ के अंतर्गत अदालती जाँच का सामना कर रहे ८,४६,२३० लोगों में से केवल २१,६६२ ही दोषी पाये गये, जो कि मात्र २.५% है ।**

देश में हर ८.५ मिनट में एक विवाहित व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है । वर्ष २०१० में ६१,४५३ विवाहित पुरुषों ने आत्महत्या की । यह आँकड़ा आत्महत्या करनेवाली विवाहित महिलाओं की संख्या (३१,७५४) से लगभग दुगना है ।

तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटील

तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटील ने भी ४९८अ के दुरुपयोग पर चिंता जताते हुए इसे देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया : ''इस तरह की घटनाएँ सामने आयी हैं, जिनमें महिलाओं की भलाई के लिए बनाये गये कानूनी प्रावधानों को तोड़-मरोड़कर आपसी बदला लेने के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है । जो कानून महिलाओं की सुरक्षा के लिए बना है, अगर वह दुरुपयोग का उपकरण बन जाय तो यह दुर्भाग्यपूर्ण है ।''

सर्वोच्च न्यायालय ने तो इस कानून को 'कानूनी आतंकवाद' की संज्ञा देते हुए कहा : ''जाँच एजेंसियों व अदालतों को पहरेदार की भूमिका निभानी चाहिए न कि रक्तपिपासु की । निश्चित रूप से उनका प्रयास यह देखने के लिए होना चाहिए कि कोई भी निर्दोष व्यक्ति आधारहीन व दुर्भावनापूर्ण आरोपों का शिकार न बने ।''

हर साल महिलाओं के खिलाफ अपराध के जितने मामले दर्ज होते हैं, उनमें से ४०% से ज्यादा मामले ४९८अ के ही होते हैं । जेल में ४९८अ के तहत केवल पुरुष ही नहीं, बड़े पैमाने पर महिलाएँ (सास-ननद) भी बंद हैं । 'नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो' रिपोर्ट-२०११ के अनुसार ४९८अ के तहत की गयी महज शिकायत पर ही बिना सुनवाई और जाँच के १,३९,४०३ पुरुषों व ४१,२९८ महिलाओं को सीधे जेल भेज दिया गया । 'ऑल इंडिया मदर-इन-लॉ प्रोटेक्शन फोरम' की अध्यक्ष नीना धुलिया कहती हैं : ''दहेज के झूठे मामले में फँसा पूरा परिवार प्रतिष्ठाहीन एवं अवसादग्रस्त हो जाता है । उनके बेटे-बेटियों की शादी नहीं हो पाती । भविष्य में इससे पूरा सामाजिक ढाँचा ही ढह जायेगा ।''

'सेव इंडियन फेमिली फाउंडेशन' के संस्थापक सदस्य गुरुदर्शन सिंह कहते हैं : ''अगर ४९८अ में केवल इतना ही प्रावधान जोड़ दिया जाय कि यदि अदालत में साबित हो जाता है कि

लड़की ने पति पर गलत आरोप लगाया था तो उसे भी सजा मिलनी चाहिए । इससे इस धारा का दुरुपयोग काफी हद तक रुक जायेगा ।''

इस कानून के दुष्प्रभाव के शिकार बच्चे भी हो रहे हैं । अमेरिका में ऐसे बच्चों पर हुए अध्ययन चौंकानेवाले हैं । जो बच्चे माँ-बाप के साथ रहते हैं, उनकी अपेक्षा परिवार टूटने से पिता से अलग रहनेवाले बच्चों में घर से भागने की ३२ गुनी, जेल जाने की २० गुनी, वर्तनात्मक विकृति की २० गुनी, बलात्कार करने की १४ गुनी, स्कूल छोड़ने की ९ गुनी और आत्महत्या करने की ५ गुनी ज्यादा सम्भावना होती है । देश में ऐसे बच्चों की तादाद लाखों में होगी ।

हाल ही में बैंगलोर के प्रतिष्ठित सॉफ्टवेअर इंजीनियर अमित बुद्धिराज ने अपनी पत्नी को मारकर स्वयं भी आत्महत्या की । इस अभागे कानून के दुरुपयोग के कारण लोगों के दिल दहलानेवाली ऐसी अनेक-अनेक घातक घटनाएँ आये दिन समाज में हो रही हैं । स्थान के अभाव के कारण हम उनका विवरण नहीं दे पा रहे हैं । निर्दोषों पर ४९८अ का कहर कब तक जारी रहेगा ? क्या जागरूक समाज, जागरूक मीडिया निर्दोषों के पक्ष में आवाज नहीं उठा सकता ? जल्द आवाज उठायें और निर्दोषों के परिवारों को मुसीबत और अवसाद से बचायें । ❑

सर्वेक्षण से सिद्ध हुई अंग्रेजी नये वर्ष के जश्न से अपराधवृद्धि

ऑस्ट्रेलिया के **'एन.एस.डब्ल्यू. अपराध सांख्यिकी और अनुसंधान विभाग'** ने सन् २००५ से २०१० इन ५ वर्षों में हुई आपराधिक घटनाओं के आँकड़ों का विश्लेषण किया । इस विश्लेषण में यह तथ्य स्पष्ट रूप से उजागर हुआ कि ३१ दिसम्बर को रात ९ बजे से नये साल (१ जनवरी) को सुबह ३ बजे के बीच **हिंसक अपराधों (हत्या, हमला, लूटपाट)** में **अन्य दिनों की तुलना में ९ गुना वृद्धि पायी गयी ।** इन हिंसक अपराधों का मूल कारण अत्यधिक मात्रा में **शराब पीना** और इसे सामाजिक **जश्न** के रूप में **मनाना** - यह था । इस दौरान **सम्पत्ति अपराध** की घटनाओं में भी बहुत वृद्धि होती है ।

ढूँढ़ो तो जानें

नीचे भगवान शिवजी के नामों के अर्थ दिये गये हैं, जिनके आधार पर वर्ग-पहेली से उन नामों को खोजिये ।

१. सृष्टि के कल्याणकर्ता २. ईश्वरों के भी ईश्वर ३. तीन नेत्रोंवाले ४. देवताओं में महान ५. हलाहल विष धारण करने से कंठ में नीले चिह्नवाले ६. नंदी के ईश्वर ७. भूतगणों के स्वामी ८. काल के भी काल ९. अत्यंत भोले १०. सृष्टि के संहारकर्ता ११. आधा पुरुष और आधा नारी का शरीर धारण करनेवाले

म	मः	ष्ट	मा	न	ज	बि	्दि	ल	अ	र्थी	ति
द	रि	क्रां	शि	मो	रं	डी	त्रि	नः	र	मा	घ
र	श	व	त्त	क	अ	सं	क्रां	लो	ध	च	अ
गी	र्णि	द्ब	दे	त्रि	क्षा	र्ध	दी	वो	च	श	त
त्रि	वि	श	रा	हा	न	कु	ना	ति	ष्ठ़	न	छि
र	हा	व	लो	ता	म	ली	हो	री	पः	ग	चे
ठ	शि	बा	श	हा	न	हे	पा	गु	श्व	श्रे	टी
ती	कं	ड	का	तां	म	र	श्व	दी	नं	र	चं
यं	नं	ल	य	स्त्र	ली	भू	मी	र	क्षि	भो	ड
ज	वा	ड़	नी	श	गु	व	त	ती	ले	ल	ग
ता	दः	म	द्र	र्व	स	ति	शः	ना	त्त	ह	घ
गी	त	रु	चं	स	र्ष	मा	थ	क्र्र	थ	प	र

अंक २४१ की पहेलियों (पृष्ठ २२) के उत्तर

ज्ञानवर्धक पहेलियाँ

(१) मोह (आत्मा का अज्ञान) (२) निंदा (३) ॐकार मंत्र (४) मौन

ढूँढ़ो तो जानें

(१) आदित्य (२) सविता (३) सूर्य (४) खग (५) पूषा (६) भानु (७) हिरण्यरेता (८) दिवाकर (९) सहस्राचि (१०) सप्तसप्ति (११) शम्भु (१२) मार्तण्डक

तीर्थ में पालने योग्य १२ नियम

- पूज्य बापूजी

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥

'हजारों अश्वमेध यज्ञ, सैकड़ों वाजपेय यज्ञ और लाखों बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल होता है, वही फल एक बार कुम्भ-स्नान करने से प्राप्त हो जाता है।'

तीर्थ में ये बारह नियम अगर कोई पालता है तो उसे तीर्थ का पूरा फायदा होता है :

(१) हाथों का संयम : गंगा में गोता भी मारा और अनधिकार किसीकी वस्तु ले ली या ऐसी-वैसी कोई चीज उठाकर मुँह में डाल ली तो पुण्यप्राप्ति का आनंद नहीं होगा।

(२) पैरों का संयम : कहीं भी चले गये मौज-मजा मारने के लिए... नहीं, अनुचित जगह पर न जायें।

(३) मन को दूषित विचारों व चिंतन से बचाकर भगवच्चिंतन करना।

(४) सत्संग व वेदांत शास्त्र का आश्रय लेना : ऐसा नहीं कि शरीर में बुखार है और दे मारा गोता। पुण्यलाभ करें और फिर हो गया बुखार या न्यूमोनिया और आदमी मर गया, ऐसा नहीं करना चाहिए। देश, काल और शरीर की अवस्था देखनी चाहिए।

(५) तपस्या

(६) भगवान की कीर्ति, भगवान के गुणों का गान कुम्भ-स्थान पर करना चाहिए।

(७) परिग्रह का त्याग : कोई कुछ चीज दे तो तीर्थ में दान नहीं लेना चाहिए। तीर्थ में दूसरों की सुविधाओं का उपयोग करके अपने ऊपर बोझा न चढ़ायें। दान का खाना, अशुद्ध खाना, प्रसाद में धोखेबाजी करके बार-बार लेना... अशुद्ध व्यवहार पुण्य क्षीण और हृदय को मलिन करता है। एक तरफ पुण्य कमा रहे हैं, दूसरी तरफ बोझा चढ़ा रहे हैं। यह न करें।

(८) जैसी भी परिस्थिति हो, आत्मसंतोष होना चाहिए। हाय रे ! धक्का-धक्की है, बस नहीं मिली... ऐसा करके चित्त नहीं बिगाड़ना। 'हरे-हरे ! वाह ! यार की मौज ! तेरी मर्जी पूरण हो !' - इस प्रकार अपने चित्त को संतुष्ट रखें।

(९) किसी प्रकार के अहंकार को न पोसें : 'मैं तो तीन बजे उठा था, मैं तो इतने मील पैदल गया और मैंने तो १० डुबकियाँ लगायीं...' - ऐसा अहंकार पुण्य को क्षीण कर देता है। भगवान की कृपा है जो पुण्यकर्म हुआ, उसको छुपाकर रखो।

(१०) 'यह करूँगा, यह भोगूँगा, इधर जाऊँगा, उधर जाऊँगा...' इसका चिंतन न करें। 'मैं कौन हूँ ? जन्म के पहले मैं कौन था, अभी कौन हूँ और बाद में कौन रहूँगा ? तो मैं तो वही चैतन्य आत्मा हूँ। मैं जन्म के पहले था, अभी हूँ और बाद में भी रहूँगा।' - इस प्रकार अपने स्वभाव में आने का प्रयत्न करें।

(११) दम्भ, दिखावा न करें।

(१२) इन्द्रिय-लोलुपता नहीं। कुछ भी खा लिया कि मजा आता है, कहीं भी चले गये... तो मौज-मजा मारने के लिए कुम्भ-स्नान नहीं है। सच्चाई, सत्कर्म और प्रभु-स्नेह से तपस्या करके अंतरात्मा का माधुर्य जगाने के लिए और हृदय को प्रसन्नता दिलाने के लिए तथा सत्संग के रहस्य का प्रसाद पाने के लिए कुम्भ-स्नान है।'' ❐